पवित्र जीवन के लिए तैयारी करना

पवित्र जीवन की प्राप्ति करना आदर्शवादी शिक्षा का एक उद्देश्य है। शिक्षा मनुष्य को इस योग्य बनाती है कि वह अच्छाइयों को ग्रहण कर सके और बुराइयों से दूर रहे। यदि वह बुराइयों से दूर रहेगा, तो उसका जीवन पवित्र हो जाएगा। पवित्र जीवन की प्राप्ति से ही मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

फ्रोबेल के अनुसार, "शिक्षा का उद्देश्य है भक्तिपूर्ण, पवित्र तथा कलंक रहित जीवन की प्राप्ति। शिक्षा को मनुष्य का पथ-प्रदर्शन इस प्रकार करना चाहिए कि उसे अपने आप ही प्रकृति का सामना करने का और ईश्वर से एकता स्थापित करने का स्पष्ट ज्ञान हो जाए।"

आदर्शवाद और पाठ्यक्रम

आदर्शवाद ने पाठ्यक्रम पर अत्यधिक प्रभाव छोड़ा है। आदर्शवादियों के अनुसार पाठ्यक्रम में मानव जाति के सम्पूर्ण अनुभवों तथा समाज की सभ्यता एवं संस्कृति के उत्कर्ष को स्थान मिलना चाहिए। अत: आदर्शवादी पाठ्यक्रम में मानवीय तथा वैज्ञानिक दोनों प्रकार के विषयों को स्थान देना चाहते हैं।

कुछ प्रसिद्ध आदर्शवादियों के पाठ्यक्रम सम्बन्धी विचार निम्न प्रकार हैं

प्लेटो के अनुसार पाठ्यक्रम

प्रसिद्ध आदर्शवादी प्लेटो के अनुसार ईश्वर की प्राप्ति जीवन का प्रमुख उद्देश्य है। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए पाठ्यक्रम की रचना भी उसी प्रकार करने को कहा है।

पाठ्यक्रम की रचना इस प्रकार होनी चाहिए कि सत्यम् शिवम् सुन्दरम् तीनों मूल्यों को प्राप्त किया जा सके। प्लेटो के अनुसार ये तीनों आदर्श बौद्धिक, नैतिक तथा कलात्मक क्रियाओं से सम्बन्ध रखते हैं। अत: पाठ्यक्रम में इन सभी विषयों का समावेश किया जाना चाहिए जो बालक के बौद्धिक, नैतिक और कलात्मक विकास के लिए आवश्यक हैं।

दर्शन के पश्चिमी सम्प्रदाय

दर्शनशास्त्र के क्षेत्र मे पश्चिम के दार्शनिको का सदा से अपना विशिष्ट स्थान रहा है। पश्चिम के दार्शनिकों की यह परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है। विश्व की अनेक राजनैतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक क्रान्तियों के प्रारम्भ होने मे इन दार्शनिको की प्रेरणा रही है। *दर्शन के प्रमुख पश्चिमी सम्प्रदायों का अध्ययन निम्नलिखित है*

आदर्शवाद

आदर्शवाद शब्द अंग्रेजी के 'Idealism' शब्द का हिन्दी रूपान्तर है, जिसका अर्थ है—विचारवाद; जबकि दूसरे रूप में- आदर्शवाद से है। इस शब्द का प्रमुख स्रोत प्लेटो के विचारवादी सिद्धान्त से हुआ, जिसके द्वारा अन्तिम सत्ता विचार अथवा विचारवाद द्वारा की जाती है। अत: स्पष्ट है कि आदर्शवाद सर्वप्रथम विचार पर बल देता है, इसके पश्चात् पदार्थ पर विचार करता है।

आदर्शवाद अध्यात्म पर बल देता है और उसे अन्तिम सत्ता मानता है। इस विचारधारा ने मन को अधिक महत्त्व दिया है। आदर्शवाद आध्यात्मिक सत्यों तथा मूल्यों-सत्यम् शिवम् सुन्दरम् को संसार में सर्वोच्च स्थान प्रदान करता है और उन्हें शाश्वत तथा सर्वव्यापी मानता है। उनकी मान्यता है कि ये मूल्य ही अन्तिम लक्ष्य की पूर्ति में सहायक होते हैं। इसलिए इनको जानना व्यक्ति का परम धर्म है। आदर्शवादी दार्शनिकों में डेकार्त, स्पिनोजा, लाइबनीज, बर्कले, काण्ट, हीगल, शैलिंग, शोपेनहावर, जेण्टाइल प्रमुख हैं। शिक्षा में आदर्शवादी विचारधारा के प्रवर्तकों में कमेनियस, पेस्टोलॉजी एवं फ्रोबेल आदि प्रमुख हैं।

भारतीय आदर्शवादी दार्शनिकों में, "महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर प्रमुख हैं।"

जे एस रॉस के शब्दो में, "शिवम्, सत्य तथा सुन्दरम् निरपेक्ष गुण हैं, जिनमें से प्रत्येक अपनी आवश्यकता के कारण उपस्थित है और वह अपने आप में पूर्ण वांछनीय है।"

एस वी हैण्डरसन के अनुसार, "आदर्शवाद मनुष्य के आध्यात्मिक पक्ष पर बल देता है, इसका कारण यह है कि आध्यात्मिक मूल्य मनुष्य और जीवन के सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं। आदर्शवादियों का विश्वास है कि मनुष्य अपने सीमित मस्तिष्कों को असीमित मस्तिष्क से प्राप्त करता है। वे यह मानते हैं कि व्यक्ति और संसार दोनों बुद्धि की अभिव्यक्तियाँ हैं। वे कहते हैं कि भौतिक संसार की व्याख्या मस्तिष्क से ही की जा सकती है।"

जे एस रॉस के अनुसार, "अध्यात्मवादी दर्शन के बहुत से और विविध रूप हैं, पर सबका आधारभूत तत्त्व यह है कि संसार का उत्पादन कारण मन या आत्मा है, वास्तविक सत्य मानसिक स्वरूप है।"

आदर्शवाद के प्रमुख सिद्धान्त

6

10

पाठ्यक्रम का स्वरूप निम्न प्रकार होना चाहिए

1

1. मानव क्रियाएँ एवं तत्सम्बन्धी विषय

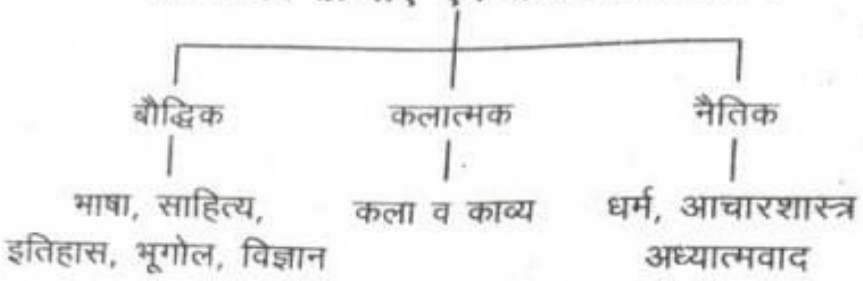

2. मानव क्रियाएँ एवं तत्सम्बन्धी विषय

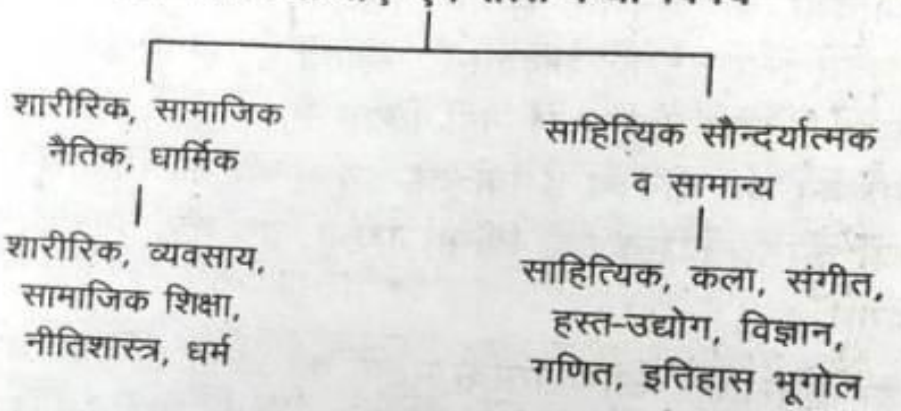

जे एस रॉस के अनुसार पाठ्यक्रम

रॉस ने आदर्शवादी पाठ्यक्रम के आयोजन में दो प्रकार की क्रियाओं पर जोर दिया है —स्वास्थ्य सम्बन्धी क्रियाएँ एवं आध्यात्मिक क्रियाएँ।

रॉस के अनुसार, "स्वास्थ्य सम्बन्धी तथा आध्यात्मिक क्रियाओं को पूर्णतः अलग नहीं किया जा सकता। उनका कुछ सामान्य आधार है। नैतिक मूल्य जो आध्यात्मिक हैं, स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यों में देखे जा सकते हैं।"

रॉस ने पाठ्यक्रम को इस प्रकार बनाया है

. मानव क्रियाएँ एवं तत्सम्बन्धी विषय

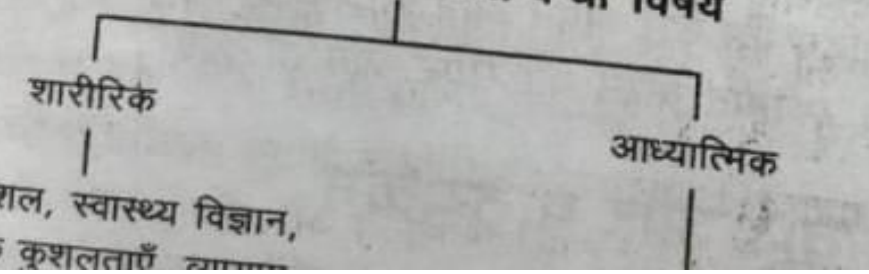

करता है। हर्बर्ट पाठ्यक्रम में साहित्य को प्रमुखता देना चाहता था और विज्ञान
स्थान देना चाहता था।

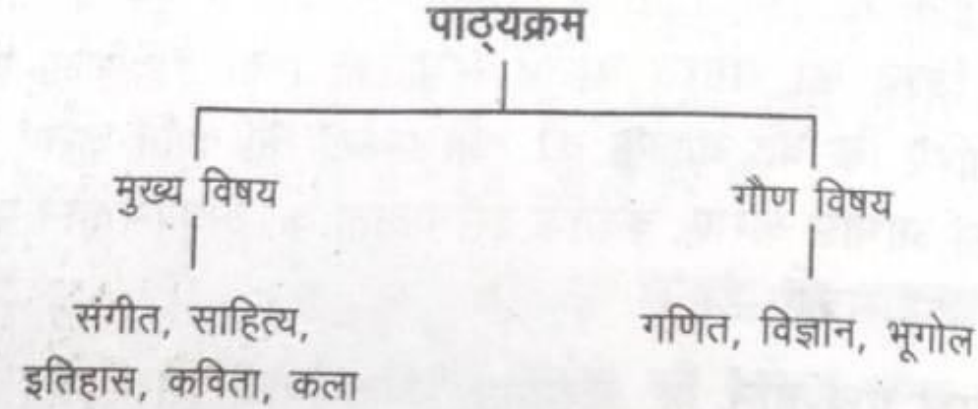

आदर्शवाद और शिक्षण विधियाँ

आदर्शवाद ने शिक्षण विधियों पर अधिक बल नहीं दिया है। आदर्शवादि अनुसार यदि शिक्षा के उद्देश्य स्पष्ट हैं, तो शिक्षक बालकों की रुचि और योग्य अनुसार शिक्षण विधियों का चयन कर सकता है। आदर्शवादी अपने को शिक्षण वि का निर्धारक मानते हैं।

बटलर के अनुसार

"आदर्शवादी स्वयं को किसी एक विधि का भक्त न मानकर, विधियों का नि और निर्धारक समझते हैं।" दूसरे शब्दों में आदर्शवादियों ने शिक्षा के क्षेत्र में अनेक शि विधियों का विकास किया। जो निम्नलिखित हैं

- सुकरात ने प्रश्न विधि
- अरस्तू ने आगमन और निगमन विधि
- हर्बर्ट ने निर्देश विधि
- फ्रोबेल ने खेल द्वारा शिक्षा विधि
- पेस्टोलॉजी ने अभ्यास व आवृत्ति विधि
- प्लेटो ने संवाद विधि
- हीगल ने तर्क विधि

आदर्शवादियों के अनुसार बालकों को शिक्षा देने की सबसे उत्तम विधि प्रश्नो तथा वाद-विवाद विधि है। आदर्शवादी व्याख्यान विधि को भी महत्त्व देते हैं।

आदर्शवाद और शिक्षक

उनके विकास के साथ-साथ उन्हें क्रमशः स्वतन्त्रता दी जाए। स्वन्त्रता विकास के अनुरूप होनी चाहिए, जैसे-जैसे बालक उसके योग्य बनता जाए वैसे-वैसे अधिकाधिक स्वतन्त्रता दी जानी चाहिए।

आदर्शवादी शिक्षा की देन

1. आदर्शवाद ही दर्शन की एकमात्र ऐसी विचारधारा है, जो शिक्षा के उद्देश्यों की विस्तृत विवेचना करता है। अन्य दार्शनिक विचारधाराओं द्वारा प्रतिपादित उद्देश्य संकीर्ण एवं अपूर्ण हैं, लेकिन यह विचारधारा व्यक्ति को उसके जीवन के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए समुचित निर्देशन देती है।
2. आदर्शवाद बालक के व्यक्तित्व के पूर्ण विकास पर बल देता है। वह बालकों में आध्यात्मिक विकास करके उसे आत्मानुभूति एवं सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् के दर्शन करने योग्य बनाना चाहता है।
3. आदर्शवादी पाठ्यक्रम सर्वाधिक उदार, सर्वाधिक प्रयत्नशील, सर्वाधिक बहुमुखी है और इसलिए मानव और समाज के सांस्कृतिक विकास के लिए सबसे अधिक उपयुक्त है।
4. आदर्शवाद बालक के लिए ऐसी शिक्षा देने पर जोर देता है, जो उनमें श्रेष्ठ चरित्र का निर्माण करे और उन्हें आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर करे।
5. आदर्शवादियों के अनुसार सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् आध्यात्मिक मूल्य हैं तथा ये मूल्य चिन्तन, शाश्वत् एवं स्थायी होते हैं।
6. आदर्शवाद ने व्याख्यान, वाद-विवाद, प्रश्न, आगमन-निगमन, अभ्यास और आवृत्ति नाटक की अनेक विधियों का निर्माण करके आवश्यकतानुसार शिक्षण को स्वतन्त्रता प्रदान की है।
7. आदर्शवाद की शिक्षा प्रक्रिया में अध्यापक को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उसने शिक्षक को छात्र का सबसे अच्छा मित्र तथा पथ-प्रदर्शक माना है।